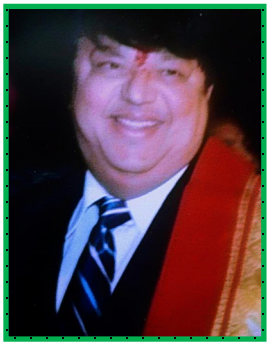
ISSN:2583-8849



प्रमोद सनाढ्य
राजसमन्द, राजस्थान

लबों पर हो हँसी सबके,खुदा मैं और क्या मांगू
जहाँ के वास्ते तुझसे, दुआ मैं और क्या मांगू

अँधेरे हो नहीँ गम के, न निकले आँख से आँसू
जला कर दीप खुशियों के,सदा मैं और क्या मांगू

रहे आबाद ये धरती गगन ये चाँद ये तारे
महकते ही रहें गुलशन, कृपा मैं और क्या मांगू

न जाने कौनसा लम्हा,सफर का आखिरी पल हो
घड़ी आये कभी ना वो, अता मैं और क्या मांगू

नहीं कोई बचा सकता,कहर कुदरत ढहाये तो
रहे महफूज हर तिनका, अजा मैं और क्या मांगू

अमानत है पराई तू, पिता की लाड़ली बेटी
तुझे हरपल मिले खुशियाँ,बता मैं और क्या मांगू

बुढापा ना बने दुसवार, कोई हो नहीँ बेघर
न छूटे आसरा कोई, पता मैं और क्या मांगू

जिन्दगी का सफ़र चार दिन का सफर
थोडी मुश्किल भरी इसकी राहें मगर

गम व खुशियों का बँधन यहाँ इस कदर
मखमली रास्ते काँटो के हैं शजर

हर पहर में बदलती फिजाँ की बहर
दिन उजाले भरे , रात काली डगर

खाक कर देती है बूंद दो ही गरल
फिर भी जी ते हैं हम, गम का पी के जहर

कोई रहता है खुद से ही खुद बेखबर
कोई रखता है यहाँ गैर के घर नजर

लोग हँस कर के मिलते मेरे गावँ में
कोई हँसता नहीं कैसा तेरा शहर

यूँ किसी को न मिलती मस्ती की ये लहर
जिस पे रब हो महर उसको मिलता सफर